अध्याय 10
प्रमोटर का चरित्र: 'विनय श्रेष्ठी' का सोमरस व्यापार और चकाचौंध का धोखा





रात का अंधकार अब और भी रहस्यमयी हो चला था। श्मशान की भूमि पर चारों ओर से गीदड़ों की डरावनी आवाजें गूँज रही थीं। राजा विक्रमादित्य ने अपने दृढ़ संकल्प को समेटा, बरगद के पुराने वृक्ष से बेताल के शव को उतारा, उसे अपने मजबूत कांधे पर लादा और बिना एक भी शब्द बोले श्मशान मार्ग पर आगे बढ़ चले। तभी बेताल का शव कांधे पर हिला और उसकी तीखी, खौफनाक हँसी सन्नाटे को चीरती हुई गूँजी।

तभी बेताल ने एक डरावनी हँसी के साथ कहा, "हे राजन! तुम्हारी यह अडिग साधना सचमुच ब्रह्मांड को विस्मित करने वाली है। इस दुर्गम मार्ग पर तुम्हारी बुद्धि की जड़ता को दूर करने के लिए, मैं तुम्हें प्राचीन मगध साम्राज्य की एक ऐसी सत्य कथा सुनाता हूँ, जो आज के हर धन-निवेशक के लिए आँखें खोलने वाली सीख है। ध्यान से सुनना राजन!"

बेताल की कथा: 'विनय श्रेष्ठी' का सोमरस व्यापार और चकाचौंध का धोखा

प्राचीन मगध साम्राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र में विनय श्रेष्ठी नाम का एक अत्यंत प्रभावशाली और विलासी (Flamboyant) व्यापारी रहता था। उसका व्यापार बहुत बड़ा था—वह मगध के सबसे उत्तम और सुगंधित 'सोमरस' का निर्माण करता था, जहाजों (Shipping) के ज़रिए विदेशों से व्यापार करता था और शाही सेना के लिए आलीशान रथों का निर्माण (Chariots Manufacturing) भी करता था।



विनय श्रेष्ठी का रहन-सहन किसी राजा से कम नहीं था। वह पानी की तरह धन बहाता था। आलीशान दावतें देना, विदेशी नर्तकियों के उत्सव आयोजित करना और मगध के बड़े-बड़े मंत्रियों, सेनापतियों तथा राजनेताओं को कीमती उपहार देना उसकी आदत थी। समाज में उसका रसूख ऐसा था कि मगध के सबसे शक्तिशाली लोग उसकी चौखट पर आकर बैठते थे। उसका व्यापार सचमुच बहुत अच्छा चल रहा था और वह हर साल भारी मुनाफा कमा रहा था।

उसी पाटलिपुत्र नगर में विष्णुदत्त नाम का एक सीधा-साधा लेकिन धनी नागरिक रहता था। विष्णुदत्त काफी समय से अपनी जमापूंजी को किसी अच्छे व्यापार में लगाने की सोच रहा था। एक दिन उसने विनय श्रेष्ठी के महल में एक भव्य उत्सव देखा, जहाँ मगध के प्रधानमंत्री और प्रधान सेनापति खुद उपस्थित थे। विनय श्रेष्ठी का ऐसा राजनैतिक और सामाजिक रसूख (Social & Political Circle) देखकर विष्णुदत्त पूरी तरह प्रभावित हो गया।

विष्णुदत्त ने सोचा, *"जिस व्यक्ति के संबंध साम्राज्य के इतने बड़े लोगों से हैं, और जिसका सोमरस तथा रथ का व्यापार इतना फल-फूल रहा है, वह कभी घाटे में नहीं जा सकता और न ही वह धोखेबाज़ हो सकता है।"*

विष्णुदत्त ने बिना विनय श्रेष्ठी के अतीत की जाँच किए, बिना उसके ऋण (Debt) के कागज़ात देखे और बिना उसके व्यक्तिगत चरित्र को परखे, अपनी जीवन भर की गाढ़ी कमाई का एक बहुत बड़ा हिस्सा विनय के व्यापार में निवेश कर दिया। शुरुआत में सब कुछ अद्भुत था। विनय के व्यापार के हिस्सों (Shares) का मूल्य आसमान छू रहा था और विष्णुदत्त कागज़ पर बहुत अमीर हो चुका था।

लेकिन वह सब एक चमकीला बुलबुला (Bubble) था। विनय श्रेष्ठी का विलासी स्वभाव और सट्टेबाज़ी की आदत अंदर ही अंदर उसे खोखला कर रही थी। उसने अपने ऊँचे संबंधों का फायदा उठाकर मगध के शाही बैंक से भारी कर्ज़ ले रखा था और अपनी कंपनियों के बहीखातों में हेरफेर (Accounting Fraud) कर रहा था।

एक दिन वह भयावह सुबह आई, जब शाही खजाने के गुप्तचरों ने विनय के जहाजों में गैरकानूनी सामान पकड़ा। जांच शुरू होते ही पता चला कि विनय पर उसकी औकात से दस गुना ज्यादा कर्ज था और उसने निवेशकों का पैसा अपनी विलासिता में उड़ा दिया था। इससे पहले कि मगध के सैनिक उसे बंदी बनाते, विनय श्रेष्ठी रात के अंधेरे में अपने बचे हुए सोने के साथ मगध की सीमा पार करके एक शत्रु देश में भाग गया।

अगले ही दिन विनय का पूरा साम्राज्य ताश के पत्तों की तरह ढह गया। उसका व्यापार बंद हो गया और उसके हिस्से (Shares) कौड़ियों के दाम आ गए। जिन निवेशकों ने, विशेषकर विष्णुदत्त ने, उसपर अंधा भरोसा करके भारी निवेश किया था, वे रातों-रात पूरी तरह कंगाल और दिवालिया (Bankrupt) हो गए।

बेताल का विकट प्रश्न

बेताल ने अपनी कहानी समाप्त की, उसकी आँखें अंगारे की तरह चमकीं। उसने राजा विक्रमादित्य से पूछा:

"अब बताओ राजा विक्रमादित्य! विनय श्रेष्ठी का व्यवसाय तो सचमुच मुनाफ़ा कमा रहा था (Profit Making Business), सोमरस और रथों की मांग भी बाज़ार में बहुत अधिक थी। फिर भी विष्णुदत्त ने अपना सारा धन क्यों खो दिया? उसकी सबसे बड़ी भूल क्या थी? हे राजन! यदि जानते हुए भी तुम मौन साधे रहोगे, तो तुम्हारे सिर के सहस्र टुकड़े हो जाएँगे !"

राजा विक्रमादित्य का धर्म-संगत उत्तर

राजा विक्रमादित्य रुके नहीं, उन्होंने शांत और दृढ़ स्वर में उत्तर दिया:

"सुनो बेताल! विष्णुदत्त की सबसे बड़ी भूल यह थी कि उसने केवल 'व्यवसाय के मुनाफ़े' और 'प्रमोटर के सामाजिक रसूख' को देखा, लेकिन 'प्रमोटर के चरित्र और उसकी नीयत' (Promoter's Character & Integrity) को पूरी तरह अनदेखा कर दिया। शेयर बाज़ार का

यह शाश्वत नियम है कि व्यवसाय कितना भी अच्छा क्यों न हो, यदि उसे चलाने वाले प्रमोटर की नीयत साफ़ नहीं है, तो वह धन कभी सुरक्षित नहीं रह सकता।

विष्णुदत्त ने तीन बड़ी गलतियाँ कीं, जो आज के निवेशकों को कभी नहीं करनी चाहिए:

चमक-दमक और प्रभाव से प्रभावित होना: विनय श्रेष्ठी का भव्य रहन-सहन और मंत्रियों के साथ उठना-बैठना उसके व्यापार की मजबूती का प्रमाण नहीं, बल्कि एक मुखौटा था। निवेशक को कभी भी प्रमोटर की लाइफस्टाइल देखकर प्रभावित नहीं होना चाहिए।

कॉर्पोरेट गवर्नेंस (Corporate Governance) की अनदेखी: एक विलासी और अहंकारी प्रमोटर, जो पानी की तरह पैसा बहाता है, वह अक्सर निवेशकों के पैसे को भी अपनी व्यक्तिगत संपत्ति समझने की भूल कर बैठता है। विनय श्रेष्ठी की व्यक्तिगत आदतें (सट्टेबाज़ी और फिजूलखर्ची) उसके खराब चरित्र को दर्शाती थीं।

इतिहास की जाँच न करना (Background Check): निवेश करने से पहले प्रमोटर के इतिहास, उसके ऊपर चल रहे विवादों और उसके नैतिक मूल्यों की जाँच करना सबसे ज़रूरी कवच है।

अगर प्रमोटर चोर या धोखेबाज़ हो, तो वह सोने की खदान को भी मिट्टी बना देता है। विष्णुदत्त ने विनय के मुनाफ़े को देखा पर विनय के लालची चरित्र को नहीं पढ़ा, इसीलिए वह एक मुनाफ़ा कमाने वाली कंपनी में निवेश करने के बावजूद बर्बाद हो गया।"

"अद्भुत राजन! तुमने प्रमोटर के चरित्र का असली महत्व समझा दिया," बेताल ने ज़ोर से अट्टहास किया। "परंतु शर्त के अनुसार, तुम बोल पड़े, इसलिए मैं चला!"

और बेताल राजा के कंधे से छूटकर फिर से उड़ गया और पेड़ की डाल पर जा लटका। राजा विक्रमादित्य ने एक बार फिर अपनी तलवार संभाली और पीछे मुड़ गए।




अमरवाणी
अध्याय का अमर नियम
"शेयर बाज़ार में कंपनी का बिज़नेस कितना भी शानदार क्यों न हो, अगर उसे चलाने वाले प्रमोटर का चरित्र, नीयत और कॉर्पोरेट गवर्नेंस (Corporate Governance) खराब है, तो वह कंपनी कभी न कभी निवेशकों का सारा पैसा डुबा देगी। निवेश करने से पहले बैलेंस शीट से ज्यादा प्रमोटर की ईमानदारी की जाँच करें।"